© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 13 Issue: 01 | January - March 2022
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Peer Reviewed and Refereed

गुरुकुल झज्जर संग्रहालय का ऐतिहासिक अध्ययन

राजेश कुमार, प्रवक्ता, द्रोणाचार्य गर्वनमेंट कॉलेज, गुरूग्राम

शोध–आलेख सार

इस आलेख के माध्यम से शोधार्थी द्वारा गुरूकुल झज्जर संग्रहालय के बारे में प्रकाश डाला गया है। लेखक ने संग्रहालय में उपलब्ध ऐतिहासिक सामग्री का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है एवं वर्तमान समय में इस संग्रहालय के महत्व पर प्रकाश डाला है।

मुख्य शब्द : पुरातत्व साक्ष्य, मूर्तियाँ, मृदभाण्ड, सिक्के, मुद्रा सांचे, कुषाण, अयोध्या।

भूमिका

गुरुकुल झज्जर ने जहाँ अन्य क्षेत्रों में राष्ट्र की सेवा की वहाँ इतिहास के क्षेत्र में भी अविस्मरणीय योगदान दिया। गुरुकुल का योगदान यहाँ तीन रूपों में है – (1) पुरातत्व संग्रहालय के रूप में, (2) इतिहास विषयक सामग्री के प्रकाशन के रूप में, (3) ताम्रपत्रों के रूप में।

इतिहास की रचना पुरातत्व साक्ष्यों के बिना असम्भव है। पुरातत्व साक्ष्यों के द्वारा भारत के प्रचलित प्राचीन इतिहास से वर्तमान रुप में हमारे सम्मुख लाने का श्रेय अलक्जैण्डर कानिघंम, रोडजर प्रिंसेप, व्हाईट हेड, सर विलियम जोन्स और एलन आदि योरोपियन विद्वानों को है। सुदूर योरोप से भारत में आकर भारतीय पुरातन खण्डहरों और ऐतिहासिक महत्व के टीलों से जो कुछ प्राप्त किया, उसे उन लोगों ने संसार के सम्मुख के सम्मुख रखा और अपने निजी विचारों के अनुसार उसको इतिहास का रूप दिया। जब सहज स्वभाव से प्राप्त वस्तुओं से प्राचीन भारतीय संस्कृति, सभ्यता की गरिमा झलकती दिखाई देने लगी तो उनके कुछ अनुयायियों ने अपनी निराधार कल्पना तथा धूर्तता के कारण भारतीय इतिहास के तथ्यों को तोड–मरोड़ कर उपस्थित करने का महान और सफल प्रयास किया। परिणामस्वरूप भारतीय जनमानस हीन भावों से ग्रस्त होता चला गया और प्राचीन भारतीय साहित्य में वर्णित भारत के गौरव को काल्पनिक मानने लग गया। ऐसे भारतीय जनमानस को भारत का सही स्वरूप दिखाने के लिए नये सिरे से सच्चे इतिहास की रचना की आवश्यकता है। इसीलिए पुरातत्व के द्वारा प्राचीन भारतीय इतिहास की सामग्री संग्रह करने तथा सत्य इतिहास लिखने के लिए आचार्य भगवानदेव (स्वामी ओमानन्द) जी के मन में गुरुकुल में पुरातत्व संग्रहालय की स्थापना का विचार उत्पन्न हुआ।[1]

सन् 1959 में एक विलक्षण घटना घटी। दिल्ली के कैर ग्राम के हाई स्कूल में ये इतिहास विषय में भाषण दे रहे थे कि हमें प्राचीन सिक्कों की खोज करनी चाहिए। भाषण के बाद एक छात्र इनके पास आया और कहा कि हमारे घर कुछ पुराने सिक्के रखे है। मकान के लिए नींव खोदते समय एक घंड़ी में मिले थे, कुछ तो बर्तन वालों की दुकान पर बेच दिए 5–7 सिक्के रखे हैं। उन्होंने उस विद्यार्थी

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 13 Issue: 01 | January - March 2022
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Peer Reviewed and Refereed

को उसी समय घर पर भेजा और कहा कि वह सिक्के लाकर दिखाये। वह सिक्के लाया और आचार्य जी को दे दिए। उस समय इनकी प्रसन्नता का कोई ठिकाना नहीं रहा। वहीं से आगे के अन्वेषण का मार्ग मिला और रोहतक, भिवानी, दादरी, हांसी, हिसार, रेवाड़ी, जगाधरी, हापुड़ और मुरादाबाद आदि बर्तन बेचने वाले नगरों में जाकर बर्तनों के दुकानदारों से मुद्राएं खरीदने लगे। कुछ समयोपरान्त जब इन सिक्कों को पढ़ा गया तो पता चला कि ये सिक्के तो आज से लगभग ग्यारह सौ वर्ष पुराने अर्थात् 9वीं शती के आर्य राजा श्री सामन्तदेव के है।

गुरुकुल में संग्रहालय की स्थापना स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने 1861 ई० में की थी। स्वामी ओमानन्द सरस्वती तथा उनके शिष्यों ने हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान के पुरातात्विक स्थलों से संग्रहालय के लिए सामग्री एकत्रित की। अब इस संग्रहालय का नाम 'हरियाणा प्रान्तीय पुरातत्व संग्रहालय' है। इस संग्रहालय में प्रस्टर मूर्तियाँ, मृन्मूर्तियाँ, मृदयाण्ड, सिक्के, मुद्रासांचे आदि असंख्य संख्या में संगृहीत हैं, जो देश के सांस्कृतिक इतिहास की झलक दिखलाते हैं। संग्रहालय में सिंधु काल से लेकर गुप्तकाल तक की मृन्मूर्तियाँ हैं।[2]

संग्रहालय में संगृहीत मुद्राओं में आहत मुद्रायें, यौधेय, कुणिन्द तथा अग्रेयगण की मुद्रायें, तक्षशिला, उज्जयिनी, मथुरा, अयोध्या, पाञ्चाल, कोशाम्बी, फुषाण, इण्डोग्रीक, गुप्तमुद्रायें तथा इण्डोसेथियन, इण्डोपार्थियन, हूण, पल्लव, गधैय्या, क्षत्रय, चोल तथा उत्पलवंशी मुद्रायें, विशेष उल्लेखनीय है। मुद्रायें ढालने के ठप्पों का भी संग्रह है। इसके अतिरिक्त प्राचीन मूर्तियों, बर्तनों, इंटो हस्तलिखित पुस्तकों का भी संग्रह है। शस्त्रागार में अस्त्र, शस्त्र, ढाल तलवार आदि भी विद्यमान हैं। इस तरह यह संग्रहालय केवल संग्रहालय न होकर प्रेरणा, उत्साह और स्वाभिमान का एक अद्भुत स्त्रोत है, जिससे भावी इतिहासकारों को भारतीय विचारधारा के अनुसार विचारने और लिखने की प्रेरणा मिलेगी।

पुरातत्व संग्रहालय का विधिवत उद्घाटन गुरुकुल के 46वें वार्षिकोत्सव पर 13 फरवरी 1961 ई० के दिन राजस्थान के प्रसिद्ध नेता चौ० कुम्भाराम आर्य के करकमलों द्वारा हुआ। इस संग्रहालय का पूरा नाम ''हरियाणा प्रान्तीय पुरातत्व संग्रहालय'' रखा गया। उद्घाटन के समय पुरातत्वीय सामग्री केवल एक छोटे से प्रकोष्ठ में फैलाकर रखी गई थी। उस समय कुछ सिक्के और प्राचीन ईंटे ही संग्रहालय में थी। सिक्के कांसी की थालियों में सजाकर रखे गए थे। सम्भवतः स्वयं आचार्य जी को भी नहीं पता था कि बहुत शीघ्र ही यह संग्रहालय इतना विशाल रूप धारण कर लेगा किन्तु सभी समझदार व्यक्ति उस समय सिक्के एक आधुनिक ढंग के विशाल संग्रहालय का रूप धारण कर लेंगे। हुआ भी यही 23 फरवरी, 1963 ई० को संग्राहलय के फैलाव को विस्तृत रूप दिया गया।

गुरुकुल के 46वें वार्षिकोत्सव पर अर्थात् 13 फरवरी, 1961 ई० के दिन यह सब सामग्री संग्रहालय के उद्घाटनार्थ एक छोटे से कमरे में कांसी की थालियों में व्यवस्था से फैलाकर रख दी

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 13 Issue: 01 | January - March 2022
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Peer Reviewed and Refereed

गई। 13 फरवरी, 1961 को सांय चार बजे राजस्थान के सुप्रसिद्ध कर्मठ नेता श्री माननीय कुम्भाराम जी आर्य के करकमलों से यज्ञानुष्ठान पूर्वक संग्रहालय का उद्घाटन हुआ।

पुरातत्व संग्रहालय के निर्माण में सन् 1965 तक लगभग 72500 (साढ़े बहत्तर हजार) रूपये व्यय हो चुका था। इस संग्रहालय में प्राचीन अलभ्य मुद्राओं का तो इतना अद्भुत संग्रह है शायद ही किसी भारतीय संग्रहालय में हो। अल्पकाल में इतने बड़े संग्रहालय (म्यूजियम) का निर्माण केवलमात्र आचार्य जी के अटूट उत्साह, गम्भीर अध्यवसाय, प्रबल लग्न, दृढ़ संकल्प और विशिष्ट कार्यक्षमता का ही परिणाम था। गुरुकुल संग्रहालय का अधिक विस्तार सन् 1963 से 1975 ई० के मध्य हुआ। इस बीच अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हुई 9 दिसम्बर, 1963 ई० को श्री मास्टर भरतसिंह जी, मामला के सौजन्य से एक अत्यन्त महत्वपूर्ण ब्राह्मी लेख युक्त मिट्टी की मोहर तथा कार्षापण, यौधेय, कुषाण, शासक कनिष्क, हुविष्क एवं भारतीय यूनानी मुद्राओं के सांचे मिले। 24 मई, 1964 ई० को खोकराकोट (रोहतक) से निकले 14 भारतीय यूनानी राजाओं के सिक्के भी मिले। खोकराकोट तथा नौरंगाबाद, इन दो खेडों के अतिरिक्त हरियाणा के और ध्वस्त दुर्गों से भी अनेक अवशेष मिले हैं, जिनमें सिन्धु सभ्यता के अवशेष भी विद्यमान हैं। तथाकथित सिन्धु सभ्यता के प्राचीन खण्डर राखीगढ़ी और मीताथल की सर्वप्रथम खोज आचार्य भगवान देव जी ने ही की थी। सुनेत (लुधियाना) तथा संघोल (लुधियाना) के खंडहरों से उपलब्ध सामग्री भी संग्रहालय में पर्याप्त मात्रा में विद्यमान है। अगरोहा, राखीगढ़ी, हाठ मीताथल, सतकुम्भ, सुघ, अहिच्छत्रा, कालीबंगा, कोशाम्बी, ढाणा (झुंझनू) आदि अनेक खण्डरों की सामग्री गुरुकुल संग्रहालय में विद्यमान है। 1965 तक संग्रहालय पर्याप्त विस्तृत हो चुका था। नये–नये सिक्के एवं मूर्तियों के संग्रह में वृद्धि होती जा रही थी जिस कारण संग्रहालय के पुराने भवन इस संग्रह के लिए कम पड़ने लगे। अतः इसके लिए नये भवन का निर्माण किया गया जिसका शिलान्यास 12 अक्टूबर 1966 को हरियाणा के तत्कालीन राज्यपाल श्री धर्मवीर जी ने किया।[3]

श्री आचार्य जी द्वारा स्थापित गुरुकुल झज्जर का संग्रहालय आज देश के प्रमुख संग्रहालयों में है। यहाँ ऐसी पर्याप्त पुरातत्वीय सामग्री है जो दूसरे किसी संग्रहालय में नहीं है। प्राचीन सिक्कों का संग्रह बेजोड़ है। सिक्कों की दृष्टि से देशभर का कोई भी संग्रहालय इसकी बराबरी नहीं कर सकता। प्राचीन गणतंत्रों के सिक्के, प्राचीन मुद्रा सांचे, शुंग, कुषाण और गुप्ताकालीन मृन्मूर्तियाँ और सैकड़ों मौहरें यहाँ की अपनी विशेषता है। प्रस्तर–मूर्तियाँ, पांडुलिपियाँ, ताम्रपत्र और शिलालेख भी यहाँ पर्याप्तमात्रा में हैं। यह संग्रहालय विशुद्ध पुरातत्वीय संग्रहालय है। ताम्रयुगीन शस्त्रास्त्रों का भी यहाँ अनूठा संग्रह है।

दो प्राचीन खण्डहरों पर आचार्य जी ने उत्खनन भी कराया। अगस्त 1964 में नौरंगाबाद (बामला) के टीले पर तथा सन् 1969 में मिताथल (भिवानी) में यह खुदाई हुई। गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों ने इन दोनों उत्खन्नों में भाग लिया। इनसे भी संग्रहालय को सामग्री मिली। नौरंगाबाद से तो बहुत ही महत्वपूर्ण सामग्री समय–समय पर मिलती रही है। यहाँ आहत मुद्राओं, 'यौधेयानां बहुधान्यके' प्रकार की

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 13 Issue: 01 | January - March 2022
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Peer Reviewed and Refereed

मुद्राओं, आठ इण्डोग्रीक तथा कनिष्क और हुविष्क कुषाण मुद्राओं की टकसालें मिली हैं। इन से प्राचीन भारत में मुद्रा निर्माण पद्धति पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। मुख्य रूप से इन्हीं के आधार पर आचार्य भगवानदेव जी ने ''भारत के प्राचीन लक्षण स्थान'' नामक ग्रन्थ की रचना की थी। संग्रहालय की दुर्लभ और महत्वपूर्ण सामग्री के आधार पर इनका दूसरा ग्रंथ ''भारत के प्राचीन मुद्रांक'' भी प्रकाशित हो चुका है। ये दोनों ही ग्रंथ भारतीय इतिहास और पुरातत्व की अमूल्य निधि है। मुद्रा–निर्माण–पद्धति पर तो इतना विस्तृत ग्रन्थ पहली बार सामने आया है। दर्जनों प्राचीन नई टकसालों को प्रकाश में लाकर इन्होंने इतिहासजगत् को अमूल्य देन दी है, जिसका मूल्यांकन भविष्य में अधिक हो सकेगा। आचार्य जी अपना अगला ग्रंथ ''ताम्रयुगीन शस्त्रास्त्र'' लिखने में संलग्न थे। इस समय पुरातत्व संग्रहालय में स्वर्ण, रजत, ताम्र, सीसा, कांसा आदि धातुओं से बनी प्राचीन मुद्रायें – पत्थर, मिट्टी, हाथी दांत, ताम्र से बनी मोहरें (मुद्रांक), मुद्रायें ढालने के सांचे, प्रस्टर मूर्तियाँ, मृन्मूर्तियाँ, मणके, ताम्र युगीन शस्त्रास्त्र, अंग्रेजी राज्य के समय की ढाल, तलवार, बन्दूक, भाले, धनुष बाण, ताड़ पत्र तथा कागज पर लिखे हस्तलिखित ग्रंथ, अनेक देशों के डाक–टिकट, सिक्के तथा अन्य अनेक प्रकार की कलात्मक वस्तुयें संग्रहित हैं। मुद्राओं में कार्णापण, यौधेय, कुणिद आर्जुनायन, औयुम्बर, आग्रेय, नाग आदि गणराज्य, मथुरा, तक्षिला, उज्जयिनी, अयोध्या, पंचाल, कौशाम्बी आदि राज्यों, कुषाण इण्डोग्रीक, क्षत्रप, गुप्त, हूण, पल्लव, चोल, राष्ट्रकूट, गुर्जरप्रतिहार, सामन्तदेव, तुर्क (गुलाम), खिलजी, तुगलक, लोधी, सूरी, मुगल और भारत के विभिन्न रजवाड़ों, अंग्रेजीराज और विदेशों की मुद्रायें विशेषकर संग्रहित की गई है।

राजा, महाराजा, सेनापति, महासेनापति, शतपति आदि राज्य कर्मचारियों, व्यक्तिगत नामों, श्रेष्ठी, निगम, संघ, गण तथा धार्मिक उपदेश आदि से युक्त अनेक प्रकार की मोहरें भी एकत्र की गई हैं। ब्राह्मी लिपी के लेख वाली सैंकड़ों महत्वपूर्ण मिट्टी की मोहरें भी संग्रहित हैं। इस सबसे बढ़कर संग्रहालय की महता एवं उपादेयता को चार चांद लगाने वाले आहत मुद्राओं, यौधेयानां, बहुधाञकेद्ध यौधेयगणस्य जय द्वित्रि; इण्डोग्रीक शासक; मिनेण्डर, अपोलोडोटस, एण्टी अल्कीदास, एरमेयस, एमण्टस, तीसियस, फिलाक्सनस, एण्टीमाक्स, कनिष्क, हुविष्क, वासुदेव कुषाणराजा आदिवराह मिहिरभोज, विग्रहपाल, गधैया, सामन्तदेव, भारतसासानी आदि की मुद्राओं के सांचों का संग्रह किया गया है।

यह सब सामग्री हरियाणा, राजस्थान, पंजाब और उत्तरप्रदेश के प्राचीन ऐतिहासिक खण्डहरों से एकत्र की है। जैसे रोहतक (खोखराकोट), अच्छेज पहाड़ीपुर, भटेड़ा (झज्जर), मोहनबाड़ी, नौरंगाबाद, मीताथल, राखीगढ़ी, कालीबंगा, अगरोहा, पौली (जींद), हाठ, सगा, सतकुम्भा (सोनीपत), सुहा (यमुनानगर), अहिच्छत्रा (बरेली), कौशाम्बी, ढाणा व्यांदा (पटनशहर), झुंझनूं, रेवाड़ी, भिवानी, हांसी, हिसार, जगाधरी, मुरादाबाद, हापुड़, लखनऊ, चन्द्रौसी, नागपुर, दिल्ली, मेरठ, जौनपुर, शाहगंज, खेतासराय, पठानकोट, जम्मू, श्रीनगर आदि स्थानों से एकत्र की गयी है। ताम्रयुगीन संस्कृति से सम्बन्धित लगभग चार सौ

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 13 Issue: 01 | January - March 2022
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Peer Reviewed and Refereed

शस्त्रास्त्र इस संग्रहालय में एकत्र किये गये हैं। भारत के अन्य किसी भी संग्रहालय में इतनी मात्रा में ताम्रयुगीन शस्त्रास्त्र नहीं हैं।[4]

पुरातत्व संग्रहालय प्राचीन मोहरों का प्रथम भाग 1975 में प्रकाशित हुआ था। इसमें लगभग 500 मोहरों का विवरण छपा था। प्राचीन सांचों से सम्बन्धित भी एक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है। इसका नाम है हरियाणा के प्राचीन लक्षण स्थान। इस ग्रन्थ में प्राचीन मुद्रा निर्माण पद्धति का विस्तार से वर्णन किया गया है। इसी संग्रहालय की सामग्री की सहायता से ताम्रयुगीन शस्त्रास्त्रों से संबंधित एक प्रामाणिक ग्रन्थ जर्मनी देश से प्रकाशित हो चुका है।

प्राचीन मुद्राओं, प्रस्तर मूर्तियों, मृन्मूर्तियों और मण्कों आदि से सम्बन्धित ग्रन्थ प्रकाशित करना इस संग्रहालय की भावी योजना के अन्तर्गत है। इस संग्रहालय में लगभग डेढ लाख सिक्के, 8 सहस्त्र मुद्रा सांचे, 2000 मुद्रांक, आठ सौ पाण्डुलिपियां, सहस्त्रों प्रस्तर मूर्तियाँ और मृन्मूर्तियाँ हैं। ये कलाकृतियाँ मौर्य, शुंग, कुषाण, यौधेय, गुप्त और प्रतिहारकालीन हैं। इन सभी का प्रकाशन अत्यावश्यक है।

निष्कर्ष

इस संग्रहालय का जहाँ तक एक मुख्योद्देश्य जनता में इतिहास के प्रति रूचि तथा प्रेम पैदा करना एवं इतिहास के महत्त्व को बताना है। यहाँ गुरुकुलीय छात्रों को क्रियात्मक रूप से इतिहास की शिक्षा देकर उन्हें इतिहास के उद्भट विद्वान बनाना तथा ऐतिहासिक खोज में रुचि पैदा करना भी है। भारतीय प्राचीन लिपियों जैसे ब्राह्मी, खरोष्ठी आदि का भी अभ्यास संग्रहालय में काम करने वाले विद्यार्थी करते हैं और इसमें उन्होंने अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ० रघुवीर वेदालंकार, महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर का शतवर्षीय इतिहास, विरजानन्द देवकरणि प्रकाशक, विद्यार्थी सभा महाविद्यालय, गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर हरियाणा।
2. डॉ० जगदीश प्रसाद, प्राचीन भारतीय मृन्मूर्ति कला पुरातत्व संग्रहाल गुरुकुल के सन्दर्भ में, हरियाणा प्रान्तीय पुरातत्व संग्राहलय गुरुकुल झज्जर, हरियाणा, 2012।
3. स्वामी ओमानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ, सम्पदाक स्नातक मंडल, गुरुकुल, झज्जर (हरियाणा)।
4. आचार्य वेदव्रत शास्त्री, स्वामी ओमानन्द सरस्वती जीवन–चरित, हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर (हरियाणा)।